Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
https://www.srjis.com/issues_data/222
Peer Reviewed, Refereed & Indexed Journal, Sept-Oct, 2023, Vol- 12/79
https://doi.org/10.5281/zenodo.10053301

महाकवि कालिदास के नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' में काव्य सौन्दर्य का स्वरुप

सीमा रानी शर्मा , Ph.D.
असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत विभाग हिंदू कॉलेज , मुरादाबाद

Paper Received On: 26 OCT 2023
Peer Reviewed On: 29 OCT 2023
Published On: 01 NOV 2023

Scholarly Research Journal's ***is licensed Based on a work at*** *www.srjis.com*

यदि हम संस्कृत साहित्य के विषय में सोचे तो वाल्मीकि एवं अश्वघोष के बाद महाकवि कालिदास का नाम संस्कृत कविता में सर्वोपरि है| यह कहना कोई विडंबना नहीं होगी कि कालिदास ने संस्कृत साहित्य में अभूतपूर्व योगदान दिया है तथा भारतीय संस्कृति एवं पौराणिक गाथाओं को एक सुन्दर वटवृक्ष के रूप में संजोया है| कालिदास की अमूल्य रचनाएँ संस्कृत साहित्य की प्रत्यक्ष प्रमाण है जैसे कि ऋतुसंहार, कुमारसंभव, मेघदूत और रघुवंश काव्यग्रंथ और मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीयम् तथा अभिज्ञानशाकुंतलम् नामक नाटक| अभिज्ञानशाकुंतलम् भारतीय रोमांटिक नाटकों में सर्वोत्कृष्ट माना जाता है| कालिदास के साहित्य में हम केवल प्रकृति सौन्दर्य ही नहीं पोत है बल्कि मानवीय व दिव्य सौन्दर्य के अनेक रूपों को भी देखा गया है|

" यद्यपि संस्कृत के अनेक कवियों ने भी सौन्दर्य शास्त्र को उत्कृष्ट योग दिया है, तदापि कालिदास ने सौन्दर्य संबंधी सर्वोत्कृष्ट धारणा प्रकट की है|" **(1)**

कालिदास के सौन्दर्य चित्रण पर भिन्न भिन्न कवियों में अनेक किवदंतियाँ दी हैं| हम जानते है कि कालिदास का जीवन के प्रति सहज अनुराग ही है जो उनके साहित्य में स्पष्ट दिखाई पड़ता है| डॉ. राम विलास शर्मा जी कहते है " विलास और वैभव का यह कवि धरती से इतना निकट है जितना कोई भौतिकवादी कवि नहीं हुआ|"**(2)** कालिदास के सौन्दर्य बोध में एक रूप और है जो मानवीय सौन्दर्य को दर्शाता है| कालिदास कहते है कि मानवीय सौन्दर्य के अंतर्गत कवि पुरुष सौन्दर्य के प्रति भी मोहित होता जाता है, परन्तु नारी सौन्दर्य की अतुलनीय एवं रमणीक प्रस्तुति कवि को ज़्यादा सफलता की ओर ले जात्ती है| कालिदास ने " रमणीयता" को सौन्दर्य का मूलभूत धर्म जाना है| **(3)**

'अभिज्ञानशाकुंतलम्' कालिदास की उन महान वेदान्तिक कृतियों में से एक है| कालिदास ने इस नाटक में सौन्दर्य स्वरुप रोमांचित दृश्यों एवं भाषा का सटीक उपयोग किया है| जैसे

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कि यह विगत है कि 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का मूल स्तोत्र महाभारत से लिया गया है| यह सात अंक का नाटक है| जिसमें हस्तिनापुर का राजा दुष्यंत और महर्षि कण्व की पालिता धर्मकन्या शकुंतला की प्रणयगाथा निबद्ध है| नाटक के प्रारंभ में ही दिखाया गया है कि किस प्रकार महर्षि कण्व की अनुपस्थिति में उनके तपोवन में दुष्यंत एवं शकुंतला का प्रथम बार मिलन होता है और वही मिलन ' गंधर्व विवाह ' का रूप धारण करता है| अभिज्ञानशाकुंतलम् की प्रशंसा केवल भारतियों ने ही नहीं की वरन विदेशियों ने भी सराहा है| जर्मन कवि गेटे ने भी इसकी प्रशंसा की है| यह तर्कसंगत नहीं हैं कि गेटे ने कितनी टिप्पणीयाँ दी है शकुंतला के सौन्दर्य के संबंध में परन्तु जो उसने शकुंतला कि आलोचना की है वह निसंदेह बहुत भावुक है| गेटे ने लिखा " यदि तुम तरुण वसंत के फूलों की सुगंध और ग्रीष्म ऋतु के मधुर फलों का परिपाक एक साथ देखना चाहते हो या उस वस्तु का दर्शन करना चाहते हो जिससे अंतःकरण पुलकित, सम्मोहित, आनंदित और तृप्त हो जाता है तो अभिज्ञानशाकुंतलम् का रसपान करो|**(4)** शकुंतला में कालिदास ने जो सौन्दर्य बोध का सोपान कराया है उसमें सबसे मार्मिक ध्वन्यात्मक संकेतों में दिखाई पड़ता है| अभिज्ञानशाकुंतलम् की सफलता इसलिए है कि सौन्दर्करण के सन्दर्भ में कालिदास ने किसी भी वस्तु एवं भाषा का निष्प्रयोजन नहीं किया है| पूर्व में हुई घटनाएँ इतने रोमांचकारी भावों से प्रदर्शित की गई है कि हम स्वयं भी आने वाली घटनाओं के प्रति जागरूक हो जाते हैं| उदहारण के लिए नाटक के प्रारंभ में भ्रमरों द्वारा शिरीष के फूलों का ज़रा ज़रा चूमना रमणीय दृश्य के सौन्दर्य का प्रतीक है|

ईषदीषच्चुम्बितानि भ्रमरैः सुकुमारकेसरशिखानि |
अवतंसयंती दयमानाः प्रमदाः शिरीषकुसुमानि || 4 || (5)

इसी प्रकार नाटक के पांचवें अंक के प्रारंभ में भी आकाश में गाते हुए इस आत्मायी गीत की स्वरलता भी किसी सौन्दर्यकरण से कम ओतप्रोत नहीं है :

अभिनवमधुलोलुपो भवांस्तथा परिचुम्बिय चूतमञ्जरीम् |
कमलवसतिमात्रनिर्वृतो मधुकर विस्मृतोऽस्येनां कथम् || 1 || (6)

प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने श्रृंगार रस का अत्यधिक सुन्दर स्वरुप प्रस्तुत करते हुए कहा है कि हे भ्रमर नये पुष्प रस के अत्यधिक लालची तुम आम्र की मञ्जरी का इतना चुम्बन करके अब कमल में रहने मात्र से संतुष्ट होकर इस आम्र मञ्जरी को कैसे भूल गये? इन पंक्तियों में कालिदास ने श्रृंगार रस के द्वारा प्रेम की सभी अछछलकृतांए एवं समर्पित मादकता से पूर्ण प्रेमी द्वारा असहाय एवं मदहोश आम्र मञ्जरी की विवशताओं का सटीक रोमांचकारी चित्रण किया है| निसंदेह कालिदास का भाषाज्ञान उनके काव्य सौन्दर्य को सर्वोच्च स्थान पर ले जाता है| यहाँ तक कि प्रोफेसर रमाशंकर तिवारी जी ने दुष्यंत के चरित्र को कालिदास का " काव्यात्मक प्रवक्ता" तक कहा है| दुष्यंत एवं शकुंतला का मिलन एवं

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रेम प्रसंग में संलग्न रहने का अलौकिक चित्रण नाटक के काव्यसौन्दर्य को चार चाँद लगा देता है| जैसे कि नाटक के प्रथम अंक में ही शकुंतला के अधरों का रसपान करने में संलग्न रसिक भ्रमर से ईष्यालु भावना के चलते राजा दुष्यंत कहता है,

" हम तो तत्त्वान्वेषण में मारे गये, तू कृतार्थ हो गया| " (7)

कालिदास ने अकृत्रिम सौन्दर्य की श्रेष्ठता को भी भलीभांति प्रदर्शित किया है| राजा दुष्यंत जब दूर से ही तापस कन्याओं को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते है और अनायास ही उनके मुख से यह भाव निकल पड़ते है " यदि तपोवन में रहने वाले लोगों का ऐसा शरीर है जो अन्तःपुरो में दुर्लभ है तो निश्चय ही वन की लताओं ने गुणों से उद्यान की लताओं को तिरस्कृत कर दिया है|" **(8)** कालिदास का मानना है कि नैसर्गिक सौन्दर्य के लिए बाह्य सौन्दर्य का कोई महत्व नहीं होता अर्थात उनके लिए कोई सौन्दर्य प्रसाधन की आवश्यकता नहीं पड़ती है| क्योंकि वह सौन्दर्य अलौकिक एवं स्वयं में परिपूर्ण होता है| शकुंतला का सौन्दर्य वल्कल वस्त्रों में अत्यंत शोभनीय दिखायी पड़ता है| यही कारण है कि जैसे ही दुष्यंत शकुंतला के सौन्दर्य को देखकर आकर्षित होता है, तुरंत ही उसके मुख से प्रशंसा के शब्द फूट पड़ते है|

"कथमियं सा कण्वदुहिता|" (9)

कालिदास ने जहाँ एक ओर नारी सौन्दर्य के प्रत्यक्ष रूप को अवनी भाषा शैली में प्रतिपादित किया है वही दूसरी ओर वे नारी सौन्दर्य के प्रति प्रकृति के नैसर्गिक सौन्दर्य से भी अधिक प्रभावित रहे है| उनके काव्य शास्त्र एवं रचनायों में हम कमल जैसे वर्णाचन जैसी मुखाकृति, पुष्प जैसे कोमल स्पर्श, हंस या मृग जैसी गति, कोकिल जैसे मधुर स्वर ध्वनि आदि स्वरुप को भी पाते है| यही वजह है कि जहाँ एक ओर पे प्रकृति का नैसर्गिक सौन्दर्य दर्शाते है वही नारी सौन्दर्य की परिकल्पना को भी साथ में प्रस्तुत करते है| राजा दुष्यंत द्वारा किया गया शकुंतला का नारी सौन्दर्य में भी प्रकृति सौन्दर्य के भावों को भी बहुत चतुराई से कालिदास ने दर्शाया है| " इसका अधर नूतन पल्लव के वर्ण का है, दोनों भुजाएं कोमल शाखाओं का अनुकरण करने वाली है और अंगों में पुष्प के सामान लुभावन यौवन जड़ा हुआ है|" **(10)** कालिदास ने नारी सौन्दर्य की जो मनमोहक एवं आकर्षक छवि अपने नाटकों में प्रस्तुत की है, वहीँ पुरुष पात्रों को भी सौन्दर्यकरण से वंचित नहीं रखा है| जैसा कि अभिज्ञानशाकुंतलम् के सप्तम अंक में बालक सर्वदमन (भरत) का जो अलौकिक स्वरुप दर्शाया है निसंदेह मन को मंत्रमुग्ध करने वाला है तथा हमारे मस्तकपटल पर अमिट छाप छोड़ता है| इस कथन में उन्होंने बालक का सरल स्वभाव, उसकी वाणी का माधुर्य, अनिमित हास तथा धूलधूसरित आकृति का परमान्नदित सौन्दर्य प्रस्तुत किया है :

स्पृहयामि खलु दुर्ललितायास्मै-
आलक्ष्यदन्तुमुकुलाननिमित्तहासै-

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रव्यक्तवर्णरमणीयवचः प्रवृतीन् |
अंकाश्रयप्रणयिनस्तनयान् वहन्तो,
धन्यास्तदंगरजसा मलिनीभवन्ति || 17 || (11)

कालिदास के काव्य सौन्दर्य के अनेक कपों को हम शनैः शनैः देख सकते है| कालिदास ने नारी सौन्दर्यकरण के साथ साथ मनोसौन्दर्यता का भी स्पष्ट स्वरुप दर्शाया है| इस स्वरुप की कल्पना आकृति सौन्दर्य एवं शील सौन्दर्य की घनिष्ठता के साथ की जा सकती है| अभिज्ञानशाकुंतलम् के चतुर्थ अंक के प्रारम्भ में प्रियंवदा- अनुसुया संवाद में प्रियंवदा शकुंतला के शील सौन्दर्य पर अपनी बात कहती है "

न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति | (12)

कालिदास ने इस प्रस्तुति में स्पष्ट कहा है कि प्रकृति एवं मानव सभी में शील सौन्दर्य की अवतारणा करके सौन्दर्य के साथ अनुपोषित संबंध दर्शाया है|

कालिदास ने अपनी रचनाओं में आतंरिक एवं बाह्य प्रेम को भी प्रस्तुत किया है| उन्होंने प्रेम को प्राकृतिक, मानवीय एवं दिव्यजीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में जाना है| यही कारण है कि अभिज्ञानशाकुंतलम् में भी हम प्रकृति प्रेम के साथ साथ स्वछंद प्रेम, दाम्पत्य प्रेम, वात्सल्य प्रेम, श्रद्धा, भक्ति और मित्रता के प्रेमभाव को सहज रूप से पाते हैं| अभिज्ञानशाकुंतलम् में अनुसुया-प्रियंवदा-शकुंतला संवाद में वनज्योत्सना नामक नवमालिका आम्र की स्वयंवर में परिणीता वधु के रूप में चित्रित की गई है| प्रियंवदा का संवाद इसका स्पष्ट भाव है|

यथा वनज्योत्सना ऽनुरूपेण पादपेन संगता,
अपि नामैवमहमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति | (13)

कालिदास का प्रेम भाव उनकी रचनाओं में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ता है| उन्होंने मानवजगत में प्रेमभाव के अनेक उदहारण दिए है| कालिदास का प्रेमभाव भौतिक स्वरुप से भिन्न है उसमें आत्मायी भावों की शीतलता पायी जाती है| कालिदास का प्रेमभाव आध्यात्मिकता से ओतप्रोत जान पड़ता है| स्वछन्द प्रेम की परिकल्पना के अनेकों उदहारण उनके साहित्य में पाए जाते है| अभिज्ञानशाकुंतलम् में जब दुष्यंत अनुसुया से प्रश्न करता है कि आखिर शकुंतला आजन्म ब्रह्मचारी कश्यप की पुत्री कैसे हो सकती है, अनुसुया सहज रूप से वर्णन करने के लिए राज ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका के स्वछन्द प्रेम की घटना की ओर संकेत देती है| वह कहती है:

गौतमीतीरे पुरा किल तस्य राजर्षेरूग्रे तपसि वर्तमानास्य किमपि
जातशंकैर्देवैर्मेनका नामाप्सराः प्रेषिता नियम-विघ्नकारिणी | (14)

इसी प्रकार कालिदास के काव्य सौन्दर्य कि एक विधा और है जो प्रेम के रूप से ही प्रकट होती है| प्रमोदय की विभिन्न मनोदशाओं का मनोवैज्ञानिक ढंग से कालिदास ने दर्शायी है|

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उन्होंने प्रेमी-प्रेमिकाओं के हृदय में पुलकित होने वाली प्रफुल्लित भावनाओं को अंतर्मन से भलीभांति समझने का प्रयास किया है या ये भी माना जा सकता है कि कालिदास प्रमोदय के विभिन्न स्वरूपों को एक धागे में पिरोकर रख दिया है| अभिज्ञानशाकुंतलम् में शकुंतला को प्रेमावेग में पाकर प्रियंवदा अनुसुया को बतलाती है कि अनुसुया उस राजर्षि के प्रथम दर्शन से ही शकुंतला व्याकुल सी हो गई है|

अनसूये, तस्य राजर्षेः प्रथमदर्शनादारभ्य पर्युत्सुकेव शकुंतला | (15)

कालिदास के काव्य सौन्दर्य की एक और पहचान रसराज है| ये माना जाता है कि 'रसराज' श्रृंगार ही कालिदास का मूल रस है| जहाँ कालिदास ने मादकता एवं उन्माद से प्रेम की परिकल्पना अपने साहित्य में प्रस्तुत की है वहीँ वियोग श्रृंगार का भी भावपूर्ण चित्रण किया है| ये सत्य है कि कालिदास ने स्त्री एवं पुरुष के शुभ मिलन को ही प्रेम का आदर्श स्वरुप माना है| अभिज्ञानशाकुंतलम् में दुष्यंत एवं शकुंतला का पारस्परिक आकर्षण उनके मधुर मिलन का दूतक है जिसमें राजा दुष्यंत शकुंतला के बारे में विदूषक को कहता है " मेरे सामने होने पर उसमे दृष्टि समेट ली, वह ऐसे हँसी मानो किसी अन्य कारण से हँस रही हो; इस प्रकार उसने विनय के द्वारा रोके गये व्यापार वाले काम को न प्रकट किया और न छिपाया ही है|" **(16)**

कालिदास ने मधुर मिलने के स्वरुप को स्पष्टता से दर्शाया है तथा इस तथ्य को भी नहीं नकारा कि आत्मिक मिलन के मार्ग में विरह एक सोपान मात्र है| विदूषक द्वारा दुष्यंत के प्रति कहे गये निम्नलिखित शब्द उनके मधुर मिलन के विरह की वेदना प्रकट करते है :

यद्येवमस्ति खलु समागमः कालेन तत्रभवत्या | (17)

इसी प्रकार के भावों को वह आगे भी कहता है :

नन्वङ्गुलीयकमेव निदर्शनमवश्यंभाव्यचिंतनीयः समागमो भवतीति | (18)

यदि हम स्मरण करे तो आत्मीयता का स्पष्ट भाव नाटक के प्रथम अंक में भी दर्शाया गया जब शकुंतला आश्रम के वृक्षों को सोचते हुई कहती है :

अस्ति मे सोदरस्नेहोऽप्येतेषु | (19)

यहाँ तक की अभिज्ञानशाकुंतलम् के अंतिम अंक में उन्होंने दिव्य और मानवीय पात्रों को एक ही राग में आलाप दिया है|

कालिदास ने वैवाहिक जीवन को सुखमय जीवन के रूप में आदर्श परिणिति संतानोत्पत्ति में ही देखी है| जहाँ एक ओर वे आदर्श पति एवं पत्नी के रूप में दिखाई देते है वहीँ कालिदास माता पिता के रूप में भी उन्हें देखने के अभिलाषी है| कश्यप द्वारा शकुंतला को दिये गये इस आशीर्वाद में यही आदर्श भाव की अनुभूति होती है :

'ययाति द्वारा सम्मानित शर्मिष्ठा के समान तू पति द्वारा बहुत आदर को प्राप्त हो| तू भी उनके समान पुरु जैसे सम्राट पुत्र को प्राप्त कर|'

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ययातेरिव शर्मिष्ठा भार्तुर्बहुमता भव |
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुही || 7 || **(20)**

अभिज्ञानशाकुंतलम् के अंतिम अंक में मातलि राजा दुष्यंत से कहता है कि सौभाग्य से आयुष्मान धर्मपत्नी के मिलन और पुत्र मुख के दर्शन से वृद्धि कोप्राप्त हो रहे है :

दिष्ट्या धर्मपत्नीसमागमेन पुत्रमुखदर्शनेन चायुष्मान् वर्धते | **(21)**

कालिदास के काव्य सौन्दर्य की विवेचना किसी भी मापदंड से की जाए जो कालिदास हर तरीके से महान ही माने जाते है| या ये कहें कि कालिदास में एक महान कवि होने के सभी गुण निहित है| कालिदास की महानता का श्रेय काव्य शैली के 'विराट तत्त्व' को भी दिया जाता है| सौन्दर्य एवं प्रेम के निरूपण की दृष्टि से उनका मूल्यांकन किया जा चुका है किन्तु विराटतत्त्व के प्रकाशन की दृष्टि से भी उनकी महत्ता स्वीकार की जाती है|

प्रो. ए.सी. शास्त्री ने अपनी पुस्तक 'स्टडी इन संस्कृत एस्थेटिक्स' में कहा है: "कालिदास, संस्कृत के राजकुमार विराट तत्त्व के विशिष्ठ कवि है|" **(22)**

अभिज्ञानशाकुंतलम् के सातवें अंक में विराट तत्त्व के सुन्दर उदहारण पाये जाते है| राजा, गगनचारी रथ में विराजमान होते हुए मेघों के मार्ग को पार करते हुए मातलि को रथ के विषय में समझाते हुए कहता है कि जलकर्णों से आर्द पहियों की परिधि वाला यह तेरा रथ अरों के छिद्रों में से होकर निकलते हुए चातक पक्षियों द्वारा तथा बिजलियों के प्रकाश से व्याप्त घोड़ों के द्वारा जल से भरे हुए मेघों के ऊपर चलना सूचित कर रहा है:

अयमरविवरेभ्यश्चातकैर्निष्पतद्भि-
र्हरिभिरचिरभासां तेजसा चनुलिप्तैः |
गतमुपरी घनानां वारिगर्भोदराणां,
पिशुनयति रथस्ते शीकरक्लिन्ननेमिः || 7 || **(23)**

कालिदास ने विराट स्वरुप को स्पष्ट रूप से दर्शाने के लिए दृष्टा कप को भी महत्व दिया है| ऐसा होने पर विराट कप अपनी नैसर्गिक प्रचंडता, रुक्षता, विशालता, भीषणता आदि से ऊपर उठ जाता है| इसलिए यह कहना अनुचित नहीं होगा कि कालिदास के काव्य में विराट रूप प्रचुर मात्रा में पाया जाता है| परिणाम स्वरुप संतुलन, सामंजस्य, गरिमा आदि सौन्दर्य के अनेक तत्त्वों का विराट तत्त्व में समावेश होने से उसकी स्वाभाविक, रुक्षता, प्रचंडता और भीषणता आदि का सर्वत्र नैसर्गिक प्रकाशन नहीं हो सका है| **(24)**

कालिदास के काव्य सौन्दर्य का अनूठा रूप हमें उनके साहित्य में विस्मय एवं अनुराग के भावों में मिलता है| पर जहाँ अलौकिकता का भाव सर्वोपरि होता है वहाँ हमें विस्मय भावना को उभारने वाले भावों का आभाव भी पाया जाता है| ऐसे में विस्मय एवं कौतुहलता का भाव स्पष्ट दिखाई नहीं देता है| उदहारण के लिए एक ज्योति द्वारा शकुंतला को उड़ाकर ले जाये

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जाने के प्रसंग के उल्लेख से पूर्ण ही कवि ने इस प्रसंग को पुरोहितों के मुख से 'अद्‌भुत' कहा है और बाद में इसको सुनने वाले सब पात्रों में विस्मय का भाव दिखलाया है:

स्त्रीसंस्थानं चाप्सरस्तीर्थमारा-
दुत्क्षिप्यैनां ज्योतिरेकं जगाम ॥ 30 ॥
प्रागपि सोऽस्माभिरर्थः प्रत्यदिष्ट एव | किं वृथा तर्केणान्विष्यते विश्राम्यतु भवान् | (25)

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि कालिदास का अभिज्ञानशाकुंतलम् का काव्य स्वरुप रोमांचकारी प्रवृत्ति के सभी रूपों विशेषकर प्रेम, विरह, वियोग, वासना, मनोस्मृति एवं विराट तत्त्व से ओतप्रोत है| इनके काव्य में रोमांचकारी सौन्दर्यबोध का समुचित समावेश है| भावगत एवं शैलीगत दोनों ही विशेषताओं का प्रयोग कालिदास जी ने नाटक में किया है| डॉ. भोलाशंकर व्यास के शब्दों में, " कालिदास कि प्रकृति मूलतः स्वछन्दवादी (रोमांटिक) है, वे प्रेमभाव के कवि है|" **(26)**

अतः कालिदास का अभिज्ञानशाकुंतलम् काव्य सौन्दर्य का सुन्दर प्रमाण है| भाषा, शब्दावली एवं रोमांचकारी अलंकारों द्वारा कालिदास ने इसे एक अमर गाथा बना दिया है| कालिदास का अभिज्ञानशाकुंतलम् एक अमूल्य देन है तथा इसे निश्चित तौर पर संस्कृत साहित्य की अभूतपूर्व कृति माना जाता गया है| इस ग्रन्थ में कालिदास ने जो पौराणिक एवं मानवीय संवेदनाओं का समागम किया है वे उनकी विराट शैली का ही चमत्कार है|

संदर्भ सूची :

"Prof. A.C.Shastri; Studies in Sanskrit Aesthetics Pg-40"
आलोचना, अप्रैल 1956 में प्रकाशित डॉ. राम विलास शर्मा का लेख ' कालिदास: साहित्य के स्थायी मूलों की समस्या' पृष्ठ 19
अभिज्ञानशाकुंतलम् 6, 6 से ऊपर
गेटे, प्रसिद्ध जर्मन कवि द्वारा दिये गये विचार अभिज्ञानशाकुंतलम् के बारे में|
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 4/1 अंक
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 1/5 अंक
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 23/1 अंक
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 15/1 अंक
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 16/1 अंक
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 18/1 अंक
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 17/7 अंक
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 4, 1 से उपर
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 1, 20 से नीचे
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 1, 22 से ऊपर
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 3, 6 से नीचे
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 11/2 अंक
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 6, 10 से ऊपर

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अभिज्ञानशाकुंतलम्, 6, 10 से नीचे
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 1, 16 से ऊपर
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 7/4 अंक
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 7, 25 से नीचे
" Kalidas*a* the Prince of Sanskrit poet, was preeminently a poet of the sublime." Prof. A.C.Shastri; *Studies in Sanskrit Aesthetics.* Pg-51
अभिज्ञानशाकुंतलम्, 7/7 अंक
.....but aesthetic grace and beauty and symmetry sphere in the sublime and prevent it from standing out with the bareness and boldness which is the sublime's natural presentation." Sri Aurobindo; Kalidasa. Pg-16
अभिज्ञानशाकुंतलम्, *5, 30* तथा नीचे ऊपर
सॅ. राजबली पाण्डेय: हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, प्रथम भाग (डॉ. भोलाशंकर व्यास: खण्ड 2, अध्याय 1) पृष्ठ 218.

Cite Your Article as:
Seema Rani Sharma. (2023). MAHAKAVI KAALIDAS KE NATAK ÄBHIDNYANSHAKUNTALUM MAIN KAVYA SAUNDARYA KA SWAROOP. In Scholarly Research Journal for Interdisciplinary studies (Vol. 12, Number 79, pp. 7–14). Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.10053301

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies